Vol 4 Issue 3 April 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-3 | April-2014
Available online at www.isrj.net

उपन्यासों एवं कहानियों का शिल्प–सौंदर्य

सुनिता क्षीरसागर
असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

सारांश **:-**
शिल्प :–

मानव जीवन गतिशील है अत: जीवन में हररोज, हर पल नव-नवीन अनुभवों की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। अनुभवों का यह आवेग उसे अभिव्यक्ति प्रक्रिया से जोड़ देता है। अभिव्यक्ति की प्रक्रिया ही कृति को 'रचना' बनाने में सहायक हो जाती है। अभिव्यक्ति भाषा और शैली इन दो माध्यमों से होती है। इतना ही नहीं बिम्ब और प्रतीक भी अभिव्यक्ति को आकर्षक व्यंजक और सजीव बनाने में सार्थक होते हैं। शिल्प का अर्थ स्पष्ट करते हुए सुदेश बत्रा ने कहा है, ''शिल्प मात्र (जैग्दह) नहीं है, वह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें साहित्य की विधाओं के अभिनव सौंदर्य को संप्रेष्य, अनुभूतिगम्य और पाठकीय संवेदना का अंग बना देने की क्षमता है।''[१]

प्रस्तावना

यह साहित्य का सामान्य सिद्धांत है कि भाषा शैली कथ्य के अनुरूप ही अपना रूप ग्रहण करती है। वस्तुत: भाषा, शिल्प और कथ्य एक-दूसरे में इस प्रकार अंतर्ग्रथित होते हैं कि उनको अलगाना समीचीन नहीं है। आधुनिक कहानी ने जिस जीवन-यथार्थ को अपना कथ्य बनाया, उसकी भाषा भी उसी मार्ग की अनुगामिनी बनी। यथार्थ से रू-ब-रू होती कहानी की भाषा में रोमन, काल्पनिकता का ऐंद्रजालिक रूप और उससे अनुस्यूत उपमान, बिंब प्रतीक विधान का अतिशय भावुकतापूर्ण आग्रह अब समाप्त प्राय है। आज कहानी की भाषा अपनी सरलता सहजता और अनगढ़ता में ही नई अर्थ-छवियाँ भरती है। जिस प्रकार कहानी आज जीवन के अत्यधिक निकट है, उसी प्रकार कहानी -भाषा भी जीवन की निकटता में ही अपना साहित्यिक, आभिजात्य स्थापित कर सकी है। कहानी भाषा के ध्वनिगत, शब्दगत, पदगत, वाक्यगत, शैलीगत और अर्थगत प्रयोगों के द्वारा किंचित स्वरूप ही समझा जा सकता है।''[२] किंतु आधुनिक कहानी की भाषात्मक संचरना को आत्मसात करने के लिए अभिनव भाषिक प्रयोगों की प्रवृत्तियों के मूल में गहरे जाकर ही समस्त कहानी भाषा के मिजाज को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

हिन्दी उपन्यास जगत के शिल्पगत परिवर्तन में अज्ञेय, रेणु, भारती और जैनेन्द्र का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन सभी साहित्यकारों ने हिन्दी उपन्यास को परंपरागत लीक से हटकर एक नया शिल्प प्रदान किया। परंपरागत शिल्प-विधान से हटकर नवीन शैलियों के सृजन में अज्ञेय बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। वर्तमान समय में यही ख्याति साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा के.के. बिड़ला फाउंडेशन के बिहारी पुरस्कार से सम्मानित अलका सरावगी को प्राप्त हुई है। ''हिन्दी की कथा परंपरा में जिन लेखकों ने इधर शैली और कथा प्रविधि के स्तर पर नए मानदंड स्थापित किए हैं उनमें अलका सरावगी का नाम सबसे ऊपर है।''[१]

अलका जी के अब तक चार उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। इनके उपन्यासों की शिल्प योजना के विषय में डॉ. नामवर सिंह का कहना है, '' हिन्दी में डेढ़ सौ साल से कथा कहने का एक ही रेखीय ढंग चला आ रहा है। उसे तोड़ने की कोशिश कई उपन्यासकारों ने की जैसे अज्ञेय ने 'शेखर एक जीवनी' में रेणु ने 'मैला आँचल' में और धर्मवीर भारती ने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में। इसी परंपरा को अलका सरावगी के उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाइपास' और 'शेष कादंबरी'आगे बढ़ाते हैं कई दृष्टियों से अलका 'शेष कादम्बरी' में 'कलि-कथा : वाया बाइपास' से भी आगे बढ़ गई है और एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार के रूप में सामने आई है।''[२]

सरावगी जी के उपन्यास अपने आप में अनूठे प्रयोगिक और रोचक हैं जो पाठक को कहीं ऊबने नहीं देते। जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है वैसे-वैसे पाठक उपन्यास की कथा में गोते लगाता है, कभी हँसता है तो कभी भावुक भी हो जाता है। शिल्प और कथ्य की दृष्टि से अलका के उपन्यास बहुत समृद्ध है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' अलका जी का पहला उपन्यास है। इसमें लेखिका ने इसकी रचना प्रक्रिया की दृष्टि से अनेक प्रयोग किए हैं, जिसके कारण यह उपन्यास प्रयोगात्मक सिद्ध होता है। उपन्यास के प्रत्येक शीर्षक का नामकरण, समय, स्थान, भाषा, ईस्वी सन्, अंक आदि पर आधारित है जो साहित्य की उपन्यास विधा में एक नवीन प्रयोग प्रतीत होता है। इसकी कथा कोलकता महानगर में रहनेवाले किशोरबाबू के बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक की कथा है जो अवांतर में एक सौ तिरालीस साल पीछे चली जाती है। और उनके पूर्वजों के लगभग डेढ़ सौ साल पुराने इतिहास को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। इस उपन्यास की समृद्धि को देखकर कहीं

से ऐसा नहीं लगता कि यह उपन्यास अलका का पहला उपन्यास है। उपन्यास में अन्य पुरुष की प्रधानता है। उपन्यासकार पूरी कथा को एक नैरेटर के रूप में कह रहा है। कई स्थानों पर आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, आत्मविश्लेषणात्मक, डायरी शैली, पत्रात्मक शैली, मिश्रित शैली, संस्मरणात्मक और संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। मुहावरे, दोहे, संस्कृत के मंत्रों तथा लोकगीतों का प्रयोग उनकी विशेषता है। हास्यास्पद घटनाओं का पुट भी बीच-बीच में दिया गया है।

उपन्यास 'शेष कादम्बरी' शिल्प की दृष्टि से काफी मजबूत, नवीन और रोचक हैं। उपन्यास में छब्बीस उपशीर्षक है, सभी उपशीर्षक उपन्यास की कथा को अपने आप में समेटे हुए हैं। कथा कहीं कहीं ऊबाऊ लगती है। उपन्यास में दो अध्यायों के बीच-बीच में कादम्बरी और रुबीदी में, दिल्ली से कोलकता एस.टी.डी. फोन पर हुई बातचीत देवीदत्त मामा पर कूरियर द्वारा भेजी गई रिपोर्ट और कादंबरी के द्वारा लिखी हुई अपनी नानी की कहानी की समीक्षा को ज्यों-का-त्यों कथा में शामिल किया गया है। उपन्यास की कथा मुसद्दीलाल की वसीयत से प्रारंभ होकर रुबी दी की वसीयत पर जाकर समाप्त होती है। रुबीदी अपनी कहानी अन्य पुरुष में लिखती है। उपन्यास की कथा का अंत रुबी दी के वसीयत नामे के बाद तो हो जाता है, लेकिन रुबी दी उपन्यास की शेष कथा, 'शेष कादंबरी' (उपन्यास) नातिन कादंबरी से लिखवाने के लिए 'ओवर टू कादंबरी' लिखकर अपने उपन्यास को कादंबरी के सुपूर्द कर देती है। अलकाजी के इस उपन्यास को मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास की श्रेणी में रखा जा सकता है। भाषा शैली की दृष्टि से उपन्यास बहुत समृद्ध है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास का शिल्प भी अन्य उपन्यासों की तरह अनूठा है। यह भी आत्मकथात्मक वर्णणात्मक, आत्मविश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, संवादात्मक, संस्मरणात्मक और मिश्रित शैली में लिखा गया है। उपन्यास की पूरी कहानी को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है, 'पूर्वकथा : अथातो मन जिज्ञासा', 'उत्तरकथा' और 'असमाप्त कथा'। 'पूर्वकथा : अथातो मन जिज्ञासा' में कुल बारह अध्याय हैं। सभी अध्यायों को एक शीर्षक दिया गया है। सभी शीर्षक उस अध्याय की कथा से संबंधित है। 'उत्तरकथा' में कुल तेरह अध्याय है। आरंभ के दो अध्यायों को अलका ने शीर्षक दिया है, लेकिन बाद के अध्यायों को कोई शीर्षक नहीं दिया है। बल्कि हर अध्याय के आरंभ का पहला अक्षर 'ड्रॉप कैप' के माध्यम से काफी बड़ा लिखा है।

उपन्यास का तीसरा अंश 'असमाप्त कथा' सिर्फ एक अध्याय का ही है जहाँ उपन्यास की कथा समाप्त होती है। इस प्रकार कुल मिलाकर इस उपन्यास में छब्बीस अध्याय है। उपन्यास की भाषा शैली वर्तमान समाज के अनुरूप है। यह अति संवेदनशील और भावनात्मक उपन्यास है।

उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' संपूर्ण उत्तर आधुनिक, वैश्वीकरण विचारोंवाला प्रतीत होता है। उपन्यास की शिल्पदृष्टि काफी मजबूत, रोचक है, तीन उपशीर्षक और पहले उपशीर्षक में दस शीर्षक है। उपन्यास का परिवेश इक्कीसवीं सदी से पूर्णत: प्रभावित है। यह उपन्यास भी अनूठा वर्णनात्मक, डायरीशैली, संस्मरणात्मक, संवादात्मक और मिश्रितशैली में लिखा है। उपन्यास की पूरी कथा तीन खंडो में वर्गीकृत है, 'प्रथम खंड', 'षष्टिपूर्ति', 'तृप्ति' और 'के.वी.' इस उपशीर्षक से उद्धृत है। उपन्यास कथा इसी उपशीर्षक से शुरू होती है। दूसरे खंड उपशीर्षक का नाम है, 'तुम चाहे जो कहो के.वी. और तीसरा खंड या उपशीर्षक 'गुरुचरण अजबदास है। इस प्रकार तीन उपशीर्षक और दस शीर्षक कुल तेरह शीर्षकों में कथा है। भाषा शैली की दृष्टि से उपन्यास बहुत समृद्ध है।

कथाकार अलका सरावगी, कृपाशंकर चौबे के एक प्रश्न पर कि, ''आप अपने शिल्प को लेकर बहुत गंभीर और संघर्षशील है। यह शिल्प आपने कैसे साधा ? कहती हैं, ''मेरे लिए शिल्प चेष्टा साध्य वस्तु नहीं है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' जब लिख रही थी, तो उसकी रचना प्रक्रिया में खुद-ब-खुद शिल्प बनता चला गया। पहले से कोई बनी बनाई प्रणाली या पूर्वाग्रह नहीं था। वह मेरे लिए उतनी ही खोज की प्रक्रिया थी, जितनी शायद पाठक के लिए रही होगी।''[१]

कहानियों का शिल्प - अलका सरावगी की कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से काफी समृद्ध और नवीन है। लेखिका शिल्प के साथ सदैव नवीन प्रयोग करती आई हैं। इनकी वैचित्र्यपूर्ण कहानियाँ भाव प्रधान, घटना प्रधान और मनोविज्ञान प्रधान है। इन कहानियों को मिश्रित शैली में लिखा गया है। जिसमें वर्णनात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक, सांकेतिक शैली और फ्लैशबैक शैली (पूर्वदीप्ति' का प्रयोग अधिकांशत: हुआ है। अलकाजी की प्राय: सभी कहानियों में न्यूनाधिक संवाद की सजीवता कथानक को गति प्रदान करती है। इनकी कहानियों की कलात्मकता, भावनात्मकता विभिन्न मूर्त-अमूर्त प्रतीकों के द्वारा मानव जीवन के कल्याणकारी तत्वों का सूक्ष्म विवेचन करती है। मनुष्य के मानसिक संघर्ष का सूक्ष्म से सूक्ष्मतम विश्लेषण करती है; जिसके आधार पर अलका जी को यथार्थपरक, मनोवैज्ञानिक कहानीकार की कोटि में रखा जा सकता है।

लेखिका लघु-कथा शैली और अनुभूतिपूर्ण शैली में अपनी कहानियाँ बेहद रोचक ढंग से लिखती हैं। इन कहानियों में कहानी तत्व और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रणावपूर्ण ढंग से हुई है। इनकी कहानियों में वे कहानियाँ भी हैं, जिनमें गहरी संवेदना है, दैनिक जीवन की सहज घटनाओं और तनावों को बड़े ही सहज रूप में रखने का सफल प्रयत्न किया गया है। व्यष्टि के माध्यम से समष्टि की समस्याओं को उभारती हैं सरावगी की कथाएँ। इस प्रकार अपने नए शिल्प के कारण अलका सरावगी साहित्य जगत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

भाषा :–

समाज में प्रचलित शब्दावली और उसे प्रयोग करने का ढंग अपने भावों को प्रकट करने का साधन ही भाषा है। साहित्य कलाकृति में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

''भाषा संस्कृति का सर्वाधिक शक्तिशाली और समृद्ध उपकरण है... इस बात को यों भी कहा जा सकता है कि भाषा एक बहुत बड़ी विभाजन शक्ति हो सकती है... भाषा का उपयोग जितना ही व्यापक और गहरा होता है, उतनी ही भाषा समृद्धतर होती है, और अपने व्यवहर्ती को समृद्ध बनाती है।''[२] नि:संदेह भाषा संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, इसका अनुभूति एवं अनुभव के साथ गहरा संबंध होता है।

''प्रभाव और शिल्प को जोड़नेवाली कड़ी कहानी की भाषा है जो एक ओर संवेदना का वहन करके सदृष्टि को उजागर करती है दूसरी ओर शिल्प को बाँधती है। भाषा को जीवन संदर्भ ही पैदा करते हैं... क्षण अपने शब्द लाते हैं और बीज में समाए शून्य नीरवता को मूक भाषा-संकेतों में रुपांतरित कर देते हैं।''[३]

अपनी कृतियों में सहजता लाने के लिए रचनाकार विश्वभर की विविध भाषाओं का प्रयोग करता है। उपन्यासों की भाषिक प्रयोग के विषय में लेखिका कहती है, ''उपन्यास की भाषा मेरे अंदर बह रहे मेरे माता-पिता की सात पीढ़ियों के पुरखों की तरह है। वह मेरी है और नहीं भी है। मारवाड़ियों की हिन्दी का अपना एक अलग संस्कार और आस्वाद है उसमें भी बंगाल में रह रहे मारवाड़ियों की हिन्दी का बिल्कुल अपना गद्य है।''[३]

अलकाजी का भाषा पर असाधारण अधिकार है। इनकी भाषा का आदर्श उनके सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर आधारित है। इन्होंने उपन्यास में भाषा की सरलता, सरसता, सहजता, संप्रेषणीयता, स्वाभाविकता और प्रवाहमयता का सर्वत्र ध्यान रखा है। अपनी भाषा में अंग्रेजी, बांग्ला, उर्दू, राजस्थानी और छिटपुट, भोजपुरी शब्दों का प्रयोग करके अलकाजी ने अपनी रचनाओं को जनमानस के बीच में पहुँचा दिया है। संदर्भानुसार मुहावरे, लोकोक्तियाँ और हास्य-प्रसंगों का भी प्रयोग बखूबी किया गया है। साथ ही सभी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का जिक्र किया है तो ग्रामीण परिवेश की भाषा को लिखकर कथा में मधुरता लाती है। शहरी परिवेश है तो शहरी भाषा के शब्द हैं। आज की हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी है जो अलका ने भी आधुनिक हिन्दी भाषा में अग्रेजी के शब्द और वाक्य कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे और ज्यों के त्यों अपनाए हैं। लेखिका ने अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों का भरपूर प्रयोग किया है। जो पात्र की भावात्मक, मानसिक बनावट और स्थिति का सुंदर चित्रण करते हैं। उपन्यासों में अनेक स्थानों पर संवादात्मक शैली का प्रयोग कर भाषा को जीवंत बनाता है। इनके उपन्यास के पात्र विभिन्न स्तर के हैं। पात्रों में आर्थिक स्तर पर सामाजिक, भाषागत, शिक्षा जातिगत मानसिक, मानवीय मूल्यों के स्तर पर परंपरागत तथा पीढ़ीगत स्तर पर अनेक असमानताएँ हैं परन्तु अलका जी की भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल है। लेखिका मानती है कि कोई भी भाषा बाजार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में जहाँ बांग्ला और राजस्थानी भाषा की बहुलता है, वहीं 'कोई बात नहीं', 'शेष कादम्बरी' में बांग्ला, अंग्रेजी की बहुलता है। 'एक ब्रेक के बाद' में अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी अर्थात् हिंग्लिश भाषा का प्रयोग किया गया है।

अलकाजी का पहला उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाइपास' में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, बंगाली, राजस्थानी आदि भाषाओं का सहज प्रयोग किया है। इस उपन्यास में जितनी भाषाएँ हैं वह सरल सहज तरलता एवं आस्वाद देती है। इसकी एकाग्रता कहीं भी टूटती नहीं। इतिहास के प्रसंगों को बयान करते हुए भाषा कहीं भी बोझिल नहीं होती न ही प्रेम प्रसंगों के दौरान शिथिल होती हैं। कविता की भाषा से प्रभावित होने के कारण इस उपन्यास की भाषा रसात्मक हो गई है। उपन्यास 'शेष कादम्बरी', 'कोई बात नहीं' में भाषिक प्रयोग सुसमृद्ध, नवीन भावात्मक, प्रवाहपूर्ण है। प्रसंगानुसार फिल्मी गीतों की पंक्तियाँ भी प्रयोग की है। उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में हिन्दी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा में सौंदर्यता लाने के लिए रचना में, मुहावरे कहावतें, वाक्यों, लोकोक्तियों का होना आवश्यक है; इसलिए चारों उपन्यासों में इनके सुंदर रूप देखने मिलते हैं.

अलका सरावगी की कहानी की भाषा समसामयिक मिश्रित हिन्दी है। कहानियाँ पढ़ने में सहज और सरल है लेकिन इस बात से इंकार भी नहीं किया जा सकता है कि लेखिका की कुछेक कहानियाँ कई स्थानों पर जटिल भी लगती हैं। भाषा का प्रवाह सहज और संप्रेषणीय है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सरावगी की भाषा कहानी के पात्रों के मनोविज्ञान के बिल्कुल अनुकूल है। कहानी की भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सरावगी ने अनेक स्थलों पर पात्रानुकूल, समयानुकूल अंग्रेजी, उर्दू, बांग्ला और मारवाड़ी शब्दों का प्रयोग भी किया है जैसा कि आमतौर पर हम अपने बोलचाल की भाषा में करते हैं। सरावगी की भाषा उनके शब्दों का भंडार पूर्णत: सम्पन्न और समृद्ध है। अलका में भाषा संप्रेषण की अभूतपूर्व क्षमता है और वे भाषा के प्रयोग के प्रति अत्यंत सजग हैं। लेखिका की कहानियों की शैली परंपरागत कहानियों के लीक से हटकर एक नए ढर्रे से लिखी गई है। जिसमें घटनाओं का बोझिल आडंबर होने के साथ-साथ किस्सा गोई का रोचक पुट भी है। कहानियों की शैली की दृष्टि से देखने पर हमें ज्ञात होगा कि अलका की कहानियां मिश्रित शैली में लिखी गई हैं। यह शैलियाँ आत्मकथात्मक, पत्रात्मक संस्मरणात्मक, प्रतीकात्मक और संकेतात्मक होने के साथ-साथ लघुकथा में लिखी गई हैं। इनकी कहानियों में नगरीय और महानगरीय जीवन की समस्याएं ही अधिक चित्रित हुई हैं।

सरावगी के दोनों कहानी संग्रहों में जितनी भी कहानियाँ हैं, अपने आप में अनूठी, एक दूसरे से अलग और नवीन है। अलकाजी की 'कहानी की तलाश में', 'हर शै बदलती है', 'मिसेज डिसूजा के नाम', 'उद्विग्नता का एक दिन', 'आप की हँसी', 'आक एगारसी', 'दूसरे किले में औरत', 'वाइल्ड फ्लावर हॉल', 'महँगी किताब' आदि कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है। 'मिसेज डिसूजा के नाम' नामक कहानी पत्र लिखने की शैली में अर्थात् पत्रात्मक शैली में लिखी गई है। कहानी की तलाश में कहानी संग्रह में अधिकांश कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी जाने के कारण कहानी में मुख्य पात्रों के नाम के स्थान पर 'मैं' उत्तम पुरुष (सर्वनाम) तथा अन्य कहानियों जैसे 'ये रह गुजर न होती', 'बहुत दूर है आसमान', 'एक व्रत की कथा', 'प्रतीक्षा के बाद', 'खिजाब' आदि कहानियों में मुख्य पात्र के स्थान पर 'वह' (अन्य पुरुष वाचक) सर्वनाम का प्रयोग किया गया है। 'महँगी किताब' नामक कहानी में कथा-नायक सीधे पाठकों से अपनी अनुभूतियाँ व्यक्त करता नजर आता है।

'दूसरी कहानी' संग्रह की अधिकांश कहानियों में सभी पात्रों को नाम दिए गए हैं। लेखिका की कहानियों की शैली की विशेषता यह है कि कहानी की रेखाएँ मनोवैज्ञानिक यथार्थ परक हैं। कहानियों को रोचक बनाने के लिए लेखिका ने बीच-बीच में कहानी के पात्रों में रोचक वार्तालाप करवाया है जो कहानी को सजीव बना देता है। कहानियों में प्रयुक्त वार्तालाप शैली इतनी जीवंत है कि पाठक को ऐसा लगता है कि इस कहानी के पात्र साधारण लोगों में से एक हैं।

पात्रानुकूल भाषा :–

अलकाजी की भाषा का आदर्श उनके पात्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर के आधार पर बना है। एक तो शिक्षित व्यक्तियों की भाषा, दूसरी अशिक्षित पात्रों की भाषा जो प्रचलित शब्द-प्रधान है। लेकिन सुनने में बहुत ही रोचक तथा मधुर लगती है।

अलकाजी के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा पूर्णत: पात्रानुकूल है। लेखिका का पहला उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाइपास' में छह-सात पीढ़ियों की कथा उससे जुड़े इतिहास को प्रस्तुत किया गया है। 'शेष कादम्बरी ' में तकरीबन सौ वर्षों की कथा को प्रकाश में लाया गया है; 'कोई बात नही' उपन्यास में लगभग चार-पाँच दशक की कथा को दर्शाया गया है। हिन्दी भाषा का जो रूप हम वर्तमान समय में देख रहे हैं वह रूप छह-सात पीढ़ी पहले १८५७ के आसपास, सौ वर्ष पहले या तीन-चार दशक पहले नहीं था। उपन्यास की कथा व समय के अनुरूप अलका जी के पात्रों की रूप-रचना जैसे-जैसे बदलती गई वैसे-वैसे उनकी भाषा अतीत से होते हुए वर्तमान समय की

भाषा बन गई। लेखिका के प्रत्येक उपन्यास के हर पात्र में बहुत असमानताएँ हैं। लेकिन अलका ने अपने प्रभावपूर्ण सहज, सरल, रोचक भाषा शैली से भाषा को पूरी तरह से प्रभावोत्पादक, पात्रानुकूल बना दिया है। इसका उदाहरण हम अलका के क्रमशः सभी उपन्यासों में देख सकते हैं।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' में हैमिल्टन साहब घमंडीलाल से अपनी जान बचाए जाने पर कहता है, ''तुम्हारा अहसान हम जीते-जी नहीं भूलेगा।'' किशोरबाबू की पत्नी पतिपरायण, धर्मपरायण, धर्मभीरु और अंधविश्वासी है, इसलिए वे अपने पति के उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहती हैं, ''हे भगवान! अब यह क्या नई बला है? हे हनुमानजी महाराज, ये ठीक हो जाएँ तो सवा मन का चूरमा सालासर में चढ़ाऊँगी।''

किशोरबाबू अपने बेटे से मेघना जूट मिल से माल का ऑर्डर मिलने की बात पूछते हैं तो वह कहता है– ''कहाँ पापा सेल्स डिपार्टमेंट ने सैंपल रिजेक्ट कर दिया। उसका आदमी लंबी घूस खाना चाहता है। अपना तो हर मिल में परसेंट फिक्स्ड है पर यह आदमी राजी नहीं हो रहा - बड़ा घाघ और लालची है। कह कहता है फलां कंपनी इतना देगी। फला उतना देगी बीस गाँधी के कम नहीं लेगा।'' (गाँधी का मतलब ५०० का नोट) इस प्रकार उपन्यास की भाषा पात्रों के स्वभाव चरित्र के बिल्कुल अनुरूप सहज और प्रवाहमयी है।

'शेष कादम्बरी' की प्रमुख पात्र रुबी दी की सास उन्हें ताना मरते हुए कहती है, ''सुन बहू, हमारे घर में सब चाय पीते हैं, दूध-रस पीना हो तो अभी बाप के घर चली जा।''

आज की पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हुई कादंबरी अपनी नानी से कहती है, ''ओह नो, नानी! मैं इंटरनेट पर सर्फिंग कर रही थी, अपने 'लैपटॉप' पर।''

रूबीदी की घर में भोजन पकानेवाली शामा उनसे सविता के विषय में अपनी गंवई अंदाज में कहती है, ''तो मेहमान से कहिए कि मेहमान की तरह रहें। हम आपकी नौकरी कर रहे हैं, इस छोकरी की नहीं। तेवर तो देखिए उसके। जब देखो हुकूम चलाती रहती है। बात करने का ढंग नहीं आता, कोई उसके जर खरीद गुलाम नहीं हैं हम लोग।''

'कोई बात नहीं' का कथा नायक शशांक एक दिन अपने दादाजी से घर के नौकर (रसोइया) रामा की तनख्वाह बढ़ाने को कहता है, ''दादाजी, हम उसकी 'सैलेरी' क्यों नहीं बढ़ा देते।'' दादाजी बोले, ''बढ़ाते तो हैं। हर साल वह बढ़वा ही लेता है पर उससे भी उसका पेट कहाँ भर भरता है? और ज्यादा रुपये एडवांस दे देंगे, तो गायब ही हो जाएगा। एडवांस देने में यहीं तो चक्कर है। रुपये भी गायब, आदमी भी गायब। इन लोगों पर दया करने में बहुत धोखे का डर है। तुम नहीं समझोगे बेटा।''

भागवत कथा सुनानेवाले पंडितजी की बेटी एक दिन शशांक के पास बैठकर उसका हाथ देखते कहती है, ''मैं कहूँ भाभी इत्ते लोग हाथ दिखाते हैं, तुम्हारे परिवार के सारे लोग, लेकिन ताज्जुब हुआ कि एक ने भी यह नहीं पूछा कि यह बच्चा कब चलेगा? बोलेगा?'' तभी शशांक की माँ ने कहा - ''लोग अपने ही सुख से सुखी होते हैं और अपने ही दुख से दुखी होते हैं।''

'एक ब्रेक के बाद' में भट्ट गुरुचरण एक औरत के साथ पहाड़ों में घूम रहे हैं। चलते-चलते भट्ट उस औरत से कुछ प्रश्न पूछता है, ''आप गुरु को कब से जानती हैं? कहाँ मिली थीं उससे?''

''हमेशा से''

''मतलब बचपन से?''

''यही समझ लीजिए''

''बच्चे हैं आपके?''

''है ना!''

''पति?''

''हाँ, वे भी हैं।''

''तब..... ?''

के.वी. शंकर अय्यर दक्षिण भारत के तमिल ब्राह्मण हैं, इसलिए ब्राह्मण की तरह ज्ञान बघारने का लोभ वे छोड़ नहीं पाते इसी कारण वे हमेशा कहते हैं, ''दुनिया को समझाने का]ारीका जिसके पास है, समझो कि दुनिया की चाभी उसी के पास है।'' इन बातों से इनकी पत्नी कभी प्रभावित नहीं होती उनका उलटा जवाब होता है, ''हाँ, तुम समझते रहो कि तुम समझा-समझाकर सच को झूठ और झूट को सच बना सकते हो।''

'कहानी की तलाश में' कहानी संग्रेह में 'बीज' कहानी का पुरुष पात्र अविनाश एक दिन अपनी पत्नी की लंबी बीमारी से परेशान होकर उस पर झल्ला पड़ता है– ''तुमने हँसना बंद कर दिया है तो क्या सारी दुनिया मनहूसियत में डूब जाए।''

'एक व्रत कथा' में पढ़ी-लिखी बहू सोचती है, ''शहरों में साँपों के कभी दर्शन नहीं होते, तब फिर नागपंचमी की पूजा करते जाने का क्या तुक है।'' इसका मानना है कि तमाम व्रत-त्योहार स्त्रियों को व्यस्त रखने और उनपर हमेशा रोक-टोक लगाने के लिए ही हैं।

'जोड़-घटाव' में सुधा एक दिन घर वापस लौटती है तो मोहन जी को अपने घर पर उसकी प्रतीक्षा करते हुए देख अचंभित हो देखती है, मोहनजी की बातचीत से आभास होता है, वे सुधा को प्रभावित करना चाह रहे हैं, ''तुमसे जलनेवालों की तो मैं एकदम छुट्टी कर दूँगा। तुम्हारी कविता की किताब का विमोचन हिन्दी का सबसे बड़ा आलोचक करेगा... मेरी जान-पहचान है भाई सबसे।'"

'दूसरी कहानी' में सुदर्शन विकालांग मानसिक रूप से अक्षम बच्चे के लिए टीचर कहती हैं, ''हम इसे क्या सिखाएँ? हम ही इससे सीख रहे हैं।''

'कब्ज हर' कहानी के सच्चिदाजी की पत्नी को दाल-भात-आलू की तरकारी के अलावा अन्य कुछ भी पकाना नहीं आता, जिसे खा-खाकर पिछले पच्चीस वर्षों से कब्ज ने उन्हें जकड़ लिया है। कई बार वे यह भी सोचते हैं कि, ''अच्छा होता, यदि अपनी पत्नी की तरह उन्होंने भी कभी इस तरह की चीजों का स्वाद जाना ही नहीं होता या वे चीजें धरती पर खत्म हो गई होतीं। तब न बचपन की यादें तंग करती, न अफसोस ही होता।''

''हेलो अंजलि! अंजलि ही हो न तुम! पहचाना नहीं मुझे? आय एम परवीन अख्तर।'' यहाँ बहुत सालों बाद एक सहेली-दूसरी सहेली को मिलती है तो दोनों में यह बातचीत है जो पात्रानुकूल भाषा दर्शाती है। ''मेरे पिताजी बहुत दिन से एक घर ढूँढ़ रहे हैं। हम लोग रिपन स्ट्रीट में रहते हैं न।''
'आक एगारसी' कहानी में ''कॉलेज में पढ़ता था आपके साथ या अखबार में काम करता था.. या किसी दफ्तर में नौकरी करता था?'"

ग्रंथ सूची

1.साहित्य और सामाजिक परिवर्तन – स. बद्रीनारायण, विश्वविद्यालय प्रकाशन 1975
2.समसामायिक साहित्य – राजकुमार राजकुमार सैनी, लोकभारती प्रकाशन 1998
3.उत्तर–आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी, रामकृष्ण प्रकाशन 2000
4.उत्तर आधुनिकता कुछ विचार – सुशान्त कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, 2002
5.उपन्यास : स्वरूप और संवेदना –राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन 2010
6.उपन्यास का पुनर्जन्म – परमानंद श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन 2000
7.वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन ओर दाम्पत्य जीवन – साधना अग्रवाल, अशोक प्रकाशन 2001
8.साहित्य और संस्कृति – मोहन राकेश, किताबघर प्रकाशन 1990
9.भारतीय कला और संस्कृति – भगवतशरण उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन 2002
10.साहित्य विधाओं की पृकृति – देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन 1999

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net